

किरान्ताराण्य मध्ये प्रहर पिछली रात्रे, चन्द्र चान्दिनी
समये, लाल चन्द्रवति श्रीलङ्गैती जी को निरखते बनदेवी
बासन्ती रामचन्द्र को कहत भई —

गीत राग भभासु

बासन्ती-

आंखिनि में राखूं तुम्हें बनवासी बलिजाउ ।

कौन देश ते आइयो कोन तुम्हारो गाउ ॥

कौने बड़भागी तैने जाइयो क्या तुम्हारो नाउ ।

वर वरणी कौने अंक में वर श्यामल सांचु सुनाउ ॥

श्रीरामचन्द्र-

वन देवी तुम्हें करूं प्रणामु ।

कौशल देश ते आइयो अयोध्या मेरो गामु ॥

राणी कौशल्या को बालिङ्गो राम हमारो नाम ।

राजु छुटियो माता तजी आयो पाहुन तुम्हरे धाम ॥

सदां जिये लक्ष्मण सिया करो सफल मनकाम ॥

बासन्ती-

रक्त बिन्दु टीका करूं नख अर्धचन्द्र ललाट ।

जगाओ इन जोगेश्वरी को क्यो सोवत प्रभात ॥

श्रीरामचन्द्र-

राज धणी भरतु भायड़ो खीरु पीवे हर्ष हुलासरो ।
सिय स्वामिनि सोवे तरु तले राम लिखियो बनवासरो ॥

बासन्ती-

जन्मीली कवन नगर में नीलकण्ठी कवने नाउ ।
मुरझाई मधु बेलि ज्यों पथश्रम क्षुधित लखाउ ॥

चन्द्रभरी सुख शरवरी पिक पञ्चम प्रारम्भ ।
मधुरानन अँसुवनि भरियो फेरत हाथ नितम्ब ॥

श्रीरामचन्द्र-

जन्मीली मिथिला नगर में राजभामिनि अयोध्या धाम ।
चंदन चंद्र ते अधिक ठंडिड़ी साहिबि श्रीसियदेवी नाम ॥

भालुनन्दन पीछे भामिनि दौड़ीं दिलिबरि साँइ ।
हाथ पांव अब थक गये सुख सोवत मुस्काइ ॥

गावो मंगल बनदेवियो जागे जानिकिड़ी अलबेलड़ी ।
संग न सहेलड़ी आई इकेलड़ी केल करे बन बेलड़ी ॥

कोकिल वचन-

अमृत जल भरी बावली स्वामिनि करेंगी स्नान ।
रक्षा करे हरि गुरु सदां मैथिलि तन मन प्रान ॥

श्रीरामचन्द्र-

चौदह लोक को पति होवां वैकुण्ठनाथु कहाउ ।
कमला सारखी कोट राणियां सियदेवी रोम न समाउ ॥

कोकिल वचन-

भूनन्दिनी सौभाग्य भारो वाणी पै वरण्यो न जाय ।
जिस वेले श्रीजानिकिचंद्र जागे उस वेलड़ी पै बलजाय ॥

वणनि वलियुनि सां,
सुखि वसु स्वामिनि ।
गरीबि श्रीखण्डिड़ी,
थींदी अनुगामिनि ॥
बन देवियूं कंदियूं,
करुणा भामिनि ।
प्यार सां खाराइनि खीरणी ॥